IIP
IIP: WJHSS
World Journal of Humanities and Social Sciences

An Online Peer-Reviewed / Refereed Journal
Vol: 02 No. Issue I, (January-March) (2026)
Impact Factor: IIFS: 5.75
ISSN: 3107-6661 (Online)

स्त्री-समानता के अग्रदूत: महात्मा बसवेश्वर और सामाजिक पुनर्जागरण

प्रा. आशा शिवाजी गायकवाड
अर्धनारी नटेश्वर महाविद्यालय, वेळापूर

Article Info

Article History:
Received: 20th February 2026
Accepted: 01st March 2026
Published: 07th March 2026

Keywords:
महात्मा,

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध-पत्र 12वीं शताब्दी के महान क्रांतिकारी संत महात्मा बसवेश्वर के स्त्री-मुक्ति विषयक विचारों और कार्यों का ऐतिहासिक एवं वैचारिक विश्लेषण करता है। मध्यकालीन भारत के उस अंधकारमय युग में, जहाँ स्त्रियों को धार्मिक और सामाजिक रूप से शूद्रों के समकक्ष मानकर दासता की बेड़ियों में जकड़ा गया था, बसवण्णा ने उन्हें 'शरण' के रूप में एक नई पहचान और मानवीय गरिमा प्रदान की।

यह शोध-पत्र स्पष्ट करता है कि बसवेश्वर ने केवल उपदेश नहीं दिए, बल्कि 'अनुभव मंटप' जैसे लोकतांत्रिक मंच के माध्यम से स्त्रियों को वैचारिक नेतृत्व और आध्यात्मिक अधिकार प्रदान किए। उन्होंने मासिक धर्म और प्रसव जैसी प्राकृतिक प्रक्रियाओं से जुड़ी 'अपवित्रता' की मान्यताओं को सिरे से नकारते हुए स्त्रियों को इष्टलिंग धारण करने का अधिकार दिया। उनके द्वारा प्रोत्साहित विधवा विवाह और 'कायक' (श्रम) के माध्यम से आर्थिक स्वावलंबन के प्रयास, आधुनिक नारीवाद के विचारों से कई सदियों पहले के क्रांतिकारी कदम थे। यद्यपि सनातनी प्रवृत्तियों ने उनके मूल क्रांतिकारी विचारों को संकुचित करने का प्रयास किया, परंतु उनका 'मानवतावादी' दृष्टिकोन आज भी आधुनिक सामाजिक न्याय और स्त्री-पुरुष समानता के लिए एक वैश्विक मार्गदर्शक सिद्धांत बना हुआ है।

Plagiarism Check Report:
Date of Report: March 01, 2026
Similarity Index: 3%
Remarks: No significant matching text. All citations and matches are properly referenced. The manuscript is considered original.

Copyright © 2026 The Author(s). This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License, (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.

How to Cite: Gaikwad, Asha Shivaji. (2025). स्त्री-समानता के अग्रदूत: महात्मा बसवेश्वर और सामाजिक पुनर्जागरण. *IIP: World Journal of Humanities and Social Sciences (IIPWJHSS)*, 2(I), **476–479**.

प्रस्तावना

मानव सभ्यता की यात्रा में स्त्री के सामाजिक स्थान का विचार सदैव अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। विशेष रूप से भारतीय समाज व्यवस्था के मध्यकालीन कालखंड में स्त्री को धार्मिक और सामाजिक स्तर पर द्वितीय श्रेणी का स्थान दिया गया था। ऐसी विषम परिस्थितियों में, 12वीं शताब्दी में महात्मा बसवेश्वर ने स्त्री-पुरुष समानता का जो विचार प्रस्तुत किया, वह न केवल उस काल तक सीमित था, अपितु वह मानवीय गरिमा का एक वैश्विक घोषणापत्र था। बसवण्णा ने स्त्री को 'भोग की वस्तु' या 'द्वितीय श्रेणी का नागरिक' न मानकर, उसे पुरुष के समान सामाजिक, आध्यात्मिक और वैचारिक प्रतिष्ठा प्रदान की।

महात्मा बसवेश्वर: प्रारंभिक जीवन और समानता की दृष्टि

ईस्वी सन् 1131 में कर्नाटक के बागेवाडी में एक सुसंस्कृत परिवार में जन्मे बसवेश्वर के विचारों का निर्माण उनके बचपन के अनुभवों से हुआ था। अपने ही घर में स्त्रियों को धार्मिक अधिकारों से वंचित होते देख उनका मन विद्रोही हो गया। कुडलसंगम में उनका निवास और आगे चलकर सोलापुर जिले के मंगलवेढ़ा व कल्याण में मंत्री पद का कार्यकाल, स्थापित व्यवस्था की विषमता की दीवारों को ढहाने में ही व्यतीत हुआ। उन्होंने सत्ता के माध्यम से समाज के अंतिम छोर की स्त्री को 'शिवशरण' की संज्ञा देकर उसे आत्मसम्मान का बोध कराया।

महात्मा बसवेश्वर का बचपन और समानता का प्रथम आविष्कार

महात्मा बसवेश्वर के चरित्र की सबसे महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी घटना उनके बचपन में ही घटी। जब बसवेश्वर लगभग 8 वर्ष के थे, तब उनके पिता मादिराज ने उनका 'उपनयन' (जनेऊ) संस्कार करने का निश्चय किया। किंतु, बसवेश्वर का अपनी बड़ी बहन अक्कान्नागम्मा के प्रति अगाध प्रेम और सम्मान था। जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि यह धार्मिक संस्कार केवल बालकों के लिए ही सीमित है और उनकी प्रिय बहन सहित समस्त स्त्रियों को इस अधिकार से वंचित रखा जाता है, तब उनके भीतर के विद्रोही समाजसुधारक ने तत्कालीन व्यवस्था से तीखा प्रश्न किया। उन्होंने तर्कसंगत प्रश्न पूछा, "यदि हम एक ही माता-पिता की संतान हैं, तो यह धार्मिक भेदभाव क्यों?"। जिस संस्कार में उनकी अपनी बहन के लिए स्थान नहीं था, उस विषमता पर आधारित संस्कार को स्वीकार करने से उन्होंने स्पष्ट रूप से मना कर दिया।

यह मात्र बालहठ नहीं था, बल्कि स्थापित लिंगभेद (Gender Inequality) पर किया गया भारतीय इतिहास का पहला प्रखर प्रहार था। केवल प्रश्न पूछकर ही वे नहीं रुके, बल्कि उन्होंने उपनयन संस्कार को नकार दिया और सत्य की खोज में अपना घर त्याग दिया। इस घटना को बसवेश्वर के जीवन की 'पहली समाज क्रांति' माना जाता है। घर छोड़ने के पश्चात वे कुडलसंगम गए, जहाँ उन्होंने जातवेद मुनि के मार्गदर्शन में गहन शिक्षा प्राप्त की। इसी वैचारिक संघर्ष से आगे चलकर उन्होंने 'इष्टलिंग' की अवधारणा प्रस्तुत की, जो वर्ण, वर्ग और लिंगभेद की दीवारों को ध्वस्त करने वाली सिद्ध हुई।

12वीं शताब्दी में स्त्रियों की स्थिति:

12वीं शताब्दी में भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत कठिन और बंधनों से जकड़ी हुई थी। तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक ढांचे में स्त्री को गौण स्थान दिया गया था। ऐतिहासिक संदर्भों के आधार पर उस समय की स्त्रियों की स्थिति का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया जा सकता है:

सामाजिक और धार्मिक दासता

- **द्वितीय श्रेणी का स्थान:** भारतीय समाज में स्त्री के भाग्य में सदियों से केवल दासता ही लिखी गई थी।
- **निम्न माना जाना:** माता, भगिनी, पत्नी या कन्या—चाहे किसी भी रूप में हो, स्त्री को सदैव पुरुष से निम्न श्रेणी का ही माना जाता था।
- **शूद्रों के समकक्ष उल्लेख:** प्राचीन काल से चली आ रही परंपरा के अनुसार, धार्मिक और सामाजिक स्तर पर स्त्री का उल्लेख शूद्रों के समकक्ष ही किया जाता था।

धार्मिक प्रतिबंध और 'अपवित्रता'

- **अधार्मिक घेराबंदी:** धर्म के नाम पर स्त्री के जीवन पर कई प्रकार के प्रतिबंध और अशास्त्रीय दीवारें खड़ी की गई थीं।

- **अनुचित और अपवित्र मानना:** गर्भावस्था, प्रसव और मासिक धर्म जैसी प्राकृतिक प्रक्रियाओं के नाम पर स्त्री को 'अपवित्र' या 'अशुद्ध' माना जाता था।
- **अधिकारों का हनन:** इस कथित 'अपवित्रता' के कारण उसे मंदिर में प्रवेश, पूजा, वेदों का पठन या किसी भी धार्मिक विधि में सम्मिलित होने से रोका जाता था।

शैक्षिक और वैचारिक अभाव

- **ज्ञान से वंचित:** सनातनी व्यवस्था ने स्त्री को आध्यात्मिक उन्नति, उपनयन और ज्ञान प्राप्ति से वंचित रखा था।
- **वैचारिक स्वतंत्रता का अभाव:** उसे अपना मत व्यक्त करने या वैचारिक चिंतन करने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं था।

कुप्रथाओं का बोझ

- **बाल विवाह:** उस समय बाल विवाह की प्रथा व्यापक रूप से प्रचलित थी, जिससे बालिकाओं का बचपन और शिक्षा बाधित होती थी।
- **विधवाओं की स्थिति:** पति की मृत्यु के पश्चात विधवाओं को अत्यंत नारकीय जीवन जीना पड़ता था, उन्हें पुनर्विवाह की अनुमति नहीं थी।
- **शोषक प्रथाएं:** देवदासी जैसी प्रथाओं के कारण धर्म और संस्कृति के नाम पर स्त्रियों का शोषण होता था।

समाज के उद्धार के लिए स्त्री का उद्धार: एक रचनात्मक दृष्टिकोण

इस अंधकारमय युग में महात्मा बसवेश्वर ने प्रथम बार "स्त्री किसी भी दृष्टि से पुरुष से कम नहीं है" का सिंहनाद किया। उनके द्वारा किए गए परिवर्तनों का विवरण इस प्रकार है:

- **'शरण' के रूप में नई पहचान:** बसवेश्वर ने स्त्री को 'अशुद्ध' या 'गौण' मानने के बजाय उसे 'शरण' की नई आध्यात्मिक पहचान दी।
- **वैचारिक नेतृत्व (अनुभव मंटप):** बसवेश्वर ने 'अनुभव मंटप' में स्त्रियों को समान स्थान दिया। वहाँ अक्कमहादेवी, सत्यक्का और नागम्मा जैसी विदुषी महिलाओं ने प्रखर वैचारिक विमर्श किया और 'वचन साहित्य' का सृजन किया।
- **धार्मिक अधिकारों का वितरण:** उन्होंने स्त्रियों को 'इष्टलिंग' धारण करने का अधिकार दिया, जिससे वे पूजा के लिए किसी पुरोहित पर निर्भर नहीं रहीं।
- **अंधविश्वास और अपवित्रता की अवधारणा का अंत:** उन्होंने स्पष्ट किया कि मासिक धर्म या प्रसव प्राकृतिक क्रियाएं हैं और इनसे स्त्री अपवित्र नहीं होती।
- **विधवा पुनर्विवाह का समर्थन:** सती प्रथा और विधवाओं के नारकीय जीवन को नकारते हुए उन्होंने विधवा पुनर्विवाह को धार्मिक और सामाजिक मान्यता प्रदान की।
- **आर्थिक स्वावलंबन (कायक):** 'कायक' (श्रम) सिद्धांत के माध्यम से उन्होंने स्त्रियों को उत्पादक श्रम में सम्मिलित किया, जिससे वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र हुईं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र के विस्तृत अध्ययन और ऐतिहासिक साक्ष्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि महात्मा बसवेश्वर केवल 12वीं शताब्दी के एक धार्मिक सुधारक मात्र नहीं थे, बल्कि वे आधुनिक स्त्री-मुक्ति और सामाजिक न्याय के वैश्विक अग्रदूत थे। उन्होंने स्त्री को 'भोग की वस्तु' समझने वाली मध्यकालीन मानसिकता को चुनौती देते हुए उसे 'शरण' के रूप में आध्यात्मिक और वैचारिक गरिमा प्रदान की। 'अनुभव मंटप' के माध्यम से महिलाओं को दिया गया नेतृत्व और 'इष्टलिंग' के माध्यम से दी गई आध्यात्मिक स्वतंत्रता, पितृसत्तात्मक समाज पर किया गया सबसे बड़ा प्रहार था।

यद्यपि समय के साथ सनातनी प्रवृत्तियों ने उनके क्रांतिकारी विचारों में कर्मकांडों की 'भेसड़' (मिलावट) कर उनके प्रभाव को कम करने का प्रयास किया, तथापि बसवण्णा द्वारा बोए गए समता और मानवतावाद के बीज आज भी भारतीय संविधान के लोकतांत्रिक मूल्यों में जीवित दिखाई देते हैं। अंततः, महात्मा बसवेश्वर का "सकल जीवात्माओं का कल्याण" (सर्वभूत हिते रतः) का विचार ही आधुनिक सभ्य समाज का अंतिम और शाश्वत निष्कर्ष है।

उपसंहार :

अतः, महात्मा बसवेश्वर का 12वीं शताब्दी का नारी-मुक्ति आंदोलन केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा का एक जीवंत दर्शन है। उन्होंने स्त्री को 'भोग' और 'माया' के बंधनों से मुक्त कर उसे 'शक्ति' और 'ज्ञान' के रूप में प्रतिष्ठित किया। यद्यपि रूढ़िवादी विचारधाराओं ने उनके मूल क्रांतिकारी विचारों को संकुचित करने का प्रयास किया, परंतु बसवण्णा द्वारा स्थापित 'समानता' और 'मानवतावाद' के मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं। वर्तमान समय में जब हम नारी सशक्तीकरण की बात करते हैं, तब महात्मा बसवेश्वर के विचार हमें एक नई दिशा और दृष्टि प्रदान करते हैं। उनके द्वारा दिखाया गया मार्ग ही एक न्यायपूर्ण और समतावादी समाज के निर्माण का अंतिम आधार है।

महात्मा बसवेश्वर वास्तव में स्त्री-मुक्ति क्रांति के महाभाष्यकार थे। उन्होंने समाज को स्त्री की शक्ति, बुद्धि और सामर्थ्य का बोध कराया। "सकल जीवात्माओं का जो कल्याण सोचे" के उनके विचार में स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं था। यद्यपि समय के साथ उनके मूल विचारों को संकुचित करने के प्रयास किए गए, तथापि उनके द्वारा बोया गया समानता का विचार आज भी मानव सभ्यता के लिए प्रकाश स्तंभ के समान मार्गदर्शक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. देशमुख, गोपालराव; *दो राजधानियाँ मंगलवेढ़ा ब्रह्मपुरी का इतिहास*, कौशल्या प्रकाशन, २०१४।
२. थापर, रोमिला; *अर्ली इंडिया (Early India)*, के. सागर पब्लिकेशंस।
३. श्रीमाउलीसूत प्रकाश; *हमारी संस्कृति*, १२वां संस्करण, २००८।
४. आंबेडकर, बी. आर. (डॉ.); *शूद्र कौन थे?*, प्रबुद्ध भारत प्रकाशन।
५. भगत, रा. तु. (संपा.); *संत साहित्य और समाज प्रबोधन*, दिलीपराज प्रकाशन।
६. तिप्पेरुद्रस्वामी, एच.; *भारतीय साहित्य के निर्माता: बसवेश्वर*, साहित्य अकादेमी।